(E) Lib. 12-12-19,

This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 1887

Unique Paper Code : 52051307 JC

Name of the Paper : हिंदी 'क'

Name of the Course : B.Com. (Prog.) CBCS

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. साहित्य की विधा के रूप में 'कहानी' की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'निबंध' के तत्वों का उल्लेख कीजिए। 12

2. 'नमक का दारोगा' कहानी किस प्रकार एक आदर्शवादी कहानी है, सोदाहरण विवेचन कीजिए।

अथवा

'मलबे का मालिक' कहानी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। 12

munotes.in

3. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', निबंध का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है', निबंध की समीक्षा कीजिए। 12

4. 'अंधेर नगरी' नाटक का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

'घीसा' के चरित्र की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 12

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) उद्योग के प्रभाव के बीच जब-जब फल की भावना मन्द पड़ती है--उसकी आशा कुछ धुंधली पड़ जाती है, तब-तब आनंद की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में भी शिथिलता आ जाती है। पर कर्म-भावना प्रधान बराबर एकरस रहता है। फलासक्त उत्साही असफल होने पर खिन्न और दुखी होता है, पर कर्मासक्त उत्साही केवल कर्मानुष्ठान के पूर्व की

mumnotes.in

अवस्था में हो जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि कर्म-भावना प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल-भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ का ही एक प्रच्छन्न रूप है।

(ख) इतना सब हो जाने पर भी जाने क्यों, मन में एक क्षीण सी आशा बनी हुई थी कि शायद वह सीधे रास्ते पर आ जाए। गांधी जी ने भी तो एक बार बचपन में चोरी की थी, बुरे कर्म किए थे फिर भी अपने आप रास्ते पर आ गए। सम्भव है, इसके हृदय में भी पश्चाताप की आग जले और यह अपने आप सुधर जाए पर अब मैंने उसे आदेश देना बंद कर दिया और धैर्य के साथ उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी, जब वह पश्चाताप की अग्नि में झुलसता हुआ मेरे चरणों में आ गिरेगा और अपने किए के लिए क्षमा मांगेगा।

(ग) वह समस्या तो कभी की हल हो गई। नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें

बनाईं। बड़े-बड़े इन्जीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर आए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 7

(क) रेखाचित्र की विशेषताएँ

(ख) व्यंग्यात्मक निबंध।

munotes.in